कलावीधि

- एफ.एम.सलीम

चाहत को संगीत में ढालने की प्रक्रिया

गायन के क्षेत्र में जब से ग्लैमर ने जगह बना ली है, तब से न केवल प्रतिस्पर्धा बढ़ गयी है बल्कि संगीत का बाज़ारीकरण भी तेज़ी से हुआ है। इसके बावजूद स्वर्णयुग मानी जाने वाली पिछली अर्धशताब्दी के हिन्दी फिल्मी गीत ही आज भी प्रथम पसंद हैं। इसी पसंद के साथ इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर से संगीतज्ञ बने मधु मोहन ने भी अपना नया अलबम 'चाहत' पेश किया है। वे कहते हैं कि संगीत का शौक़ उन्हें बचपन से नहीं रहा, लेकिन संगीत उन्हें अपनी माँ और नानी से विरासत में मिला था। उनकी कुछ स्मृतियाँ यहाँ पेश हैं-

'माँ को घर में वायलिन और हार्मोनियम बजाते हुए देखता था। इन्टरमीडियट तक आने तक भी मैंने उस ओर कभी अधिक ध्यान नहीं दिया, लेकिन इन्टर के दूसरे वर्ष में दिल ने कहा कि कोई चीज़ है जो मुझ से छूटी जा रही है और वह निश्चित ही संगीत था। दूसरे वर्ष जब मैं इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग में प्रवेश के लिए कनाडा गया, तो वहाँ बेचैनी और बढ़ी। यही बैचैनी मुझे वापस ले आयी और फिर मैंने इंजीनियरिंग की शिक्षा उस्मानिया विश्वविद्यालय से जारी रखते हुए, गवर्नमेंट म्यूज़िक कॉलेज में प्रवेश लिया और पहले डिप्लोमा और बाद में कर्नाटक संगीत में एम.ए. किया। हालाँकि मैंने स्वरों के अध्ययन में पी.एच-डी की उपाधि प्राप्त की है, लेकिन दिल में एक लगन थी कि हिन्दी गीतों का अपना कोई अलबम हो। दो साल पहले जब यह ख्याल आया और मैंने अपने आपको टटोला, तो पाया कि संगीत के प्रति रूचि मुझमें बचपन से ही थी, क्योंकि रफी साहब को मैं बहुत सुनता था। मन में तय किया कि उसी तरह के संगीत को बढ़ावा देने के लिए कुछ करना चाहिए। मैं चाहता था कि पहले से मौजूद गीतों के चयन के बजाय नये गीत लिखवाए जाएँ। इसके लिए मैंने हैदराबाद के कवियों और शायरों से संपर्क किया और मुझे पूरा सहयोग मिला। पहले तो मैंने सोचा था कि मैं केवल गाउँगा, लेकिन फिर एम एम किरमानी ने सुझाव दिया कि इसका निर्देशन भी मुझे खुद ही करना चाहिए, सो निर्देशन की कमान भी मैंने ही सम्हाली।

> *दिल में एक लगन थी कि हिन्दी गीतों का अपना कोई अलबम हो। दो साल पहले जब यह ख्याल आया और मैंने अपने आपको टटोला, तो पाया कि संगीत के प्रति रूचि मुझमें बचपन से ही थी, क्योंकि रफी साहब को मैं बहुत सुनता था। मन में तय किया कि उसी तरह के संगीत को बढ़ावा देने के लिए कुछ करना चाहिए।*

राशिद आज़र साहब ने एक गीत लिखा है -चाहत क्या है, चाहत क्या है, मेरे दिल से पूछो....इस गीत को गुनगुनाते हुए मैंने पाया कि इस को राग बेहाग में अच्छा गाया सकता है। मुंबई में जब इसकी रिकार्डिंग हो रही थी, मुझे लगा कि मुखड़े में एक ही मिसरा है, एक और मिसरा हो तो गीत और अच्छा बन जाएगा। वहीं से मैंने राशिद साहब को फोन पर यह बात बताई। उन्होंने उसी समय एक और मिसरा जोड़ा-

एक कांटा-सा दिल में चुभा है, मेरे दिल से पूछो..

बातों-बातों में उन्होंने पूछा कि किस राग में गा रहे हो, मैंने उन्हें राग बेहाग के बारे में बताया। तभी उन्होंने कुछ और लाइनें उस गीत में जोड़ी-

छाती में एक बांध हो जैसे
फूलों की मुस्कान हो जैसे
उस बिन घर सुनसान हो जैसे
राग बेहाग की तान हो जैसे

इस गीत को जब रिकॉर्ड किया गया तो एक नयी चीज़ बन कर सामने आ गयी।

नरेन्द्र राय साहब को मैंने अलबम के लिए एक गीत लिखने का अनुरोध किया था। उन्होंने जो गीत लिखा, उसमें परिवर्तन के लिए मैंने लगभग 14 बार उनको तकलीफ दी और उनसे कुछ परिवर्तन का अनुरोध करता रहा। इतनी बार उनको परेशान किया, लेकिन कभी उन्होंने बुरा नहीं माना, बल्कि वे कहते रहे- जब तक मैं संतुष्ट न हो जाऊँ, आता रहूँ। वह गीत है- मेरे मन पर छा गयी गोरी...। पहले मेरा इरादा इसी गीत पर वीडियो बनाने का था, क्योंकि यह गीत काफी अच्छा बना था। इसकी धुन बनाने के लिए मैं तीन दिन तक तमिलनाडु के वनक्षेत्र मुद्दुमुलई में रहा। राग भैरवी में इसको गाया गया। इस गीत में एक छंद है, जिस में तबले की थाप के बाद कत्थक नृत्य का आभास होता है और यह गीत राधा-कृष्ण के पारंपरिक नृत्य की याद दिलाता है।

साक़िब बनारसी साहब का एक गीत इस अलबम में शामिल है। मैं अपने विचार उनको समझा नहीं पा रहा था, लेकिन मैं चाहता था कि उनका एक गीत इस अलबम में ज़रूर होना चाहिए। इसका हल यह निकाला गया कि हम दोनों मिल कर देवि रमनामूर्ति के यहाँ गये और मैंने अपनी बात उनके सामने रखी। उन्होंने साक़िब साहब को मेरी बात समझाने में कुछ इस तरह मदद की कि साक़िब साहब ने वहीं पर बैठ कर वह गीत लिखा और वही गीत बाद में वीडियो फिल्म का हिस्सा बना।

इस अलबम में दो युगल गीत हैं। इस संबंध में जब साधना सरगम जी से बात हुई तो उन्होंने सहर्ष इसको स्वीकार किया। उन्होंने जो कहा, मैं वह भूल नहीं सकता- 'प्रोफेशन में कई तरह के गीत गाने पड़ते हैं, अपने लिए गीत गाने का अवसर तो बहुत कम मिलता है।'

अलबम की तैयारी के दौरान मैंने कई लोगों से मुलाक़ात की और ऐसे कई लोग मिले जिन्होंने 80 के दशक के पूर्व के गीतों को ही अपनी पसंद माना। शायद यही कारण रहा कि उसी तर्ज़ के गीतों को गाने का मेरा इरादा और मज़बूत हो गया।

Hindi Milap, March 2, 2008